कबीरदास का जीवन परिचय

महान् कवि एवं समाज सुधारक महात्मा कबीर का जन्म काशी में सन् 1398 ई. के लगभग हुआ। वे एक दम्पत्ति को तालाब के किनारे पड़े मिले थे। वहाँ से नीरू-नीमा नामक जुलाहा दम्पत्ति ने इनको उठा लिया और अपने पुत्र के समान पालन-पोषण किया। इनका विवाह 'लोई' नामक स्त्री के साथ हुआ था। इनके कमाल और कमाली नाम की दो सन्तानें पैदा हुईं।

इन पर बचपन से ही हिन्दू और मुसलमान दोनों धर्मों के संस्कार पड़े थे। कबीर का लालन-पालन एक मुस्लिम जुलाहे के घर में हुआ था। काम भी जुलाहे का करते थे। फिर भी राम नाम जपा करते थे। एक बार काशी में स्वामी रामानन्द आये हुये थे। वे राम की महिमा का प्रचार करते थे। रात्रि में कबीर गंगास्नान करने उसी घाट पर गये जहाँ स्वामी रामानन्द स्नान किया करते थे। अंधेरे में स्वामीजी का पैर कबीर पर पड़ गया। वे बोले, "राम नाम कह" इसी कथन को कबीर ने अपना गुरु मंत्र मान लिया। वे तभी से रामानन्द को अपना गुरु मानने लगे।

कबीर पढ़े लिखे नहीं थे। पर इनमें अद्भुत काव्य-प्रतिभा थी। कबीर का धर्म मानव-धर्म था। वे मन्दिर, तीर्थाटन, माला, नमाज, पूजा-पाठ आदि को आडम्बर मानते थे। वे साधुओं की संगति करते थे। उनका बड़प्पन इसी में था कि उन्होंने हिन्दू और मुसलमानों में प्रेम बढ़ाने की चेष्टा की। वे कहते थे कि "दोनों का ईश्वर एक है। वह चाहे जिस नाम से पुकारा जाये। आपस में झगड़ा करना मूर्खता है।" वे अपनी बात सीधी सादी भाषा में कहते थे।

आपने अपनी रचनाओं द्वारा हिन्दू-मुसलमानों को एक करने का भरसक प्रयत्न किया।

—प्रकाशक

कबीर दोहावली

तिनका कबहुँ ना निंदिये, जो पाँव तले होय।
कबहुँ उड़ आखों पड़े, पीर घनेरी होय॥

तिनके को भी कभी छोटा नहीं समझना चाहिए, चाहे वह आपके पैर तले ही क्यों न हो क्योंकि यदि वह उड़कर आपकी आँखों में पड़ जाए तो बहुत कष्ट पहुँचाता है।

सतगुर हम सूँ रीझि करि, एक कह्या प्रसंग।
बरस्या बादल प्रेम का, भीजि गया सब अंग॥

सतगुरु ने प्रसन्न होकर हमें ज्ञान का उपदेश दिया। इस उपदेश से हमारे हृदय में व्यापक भक्ति का जन्म हुआ। भक्ति के इस बादल से प्रेम और स्नेह की वर्षा हुई जिससे हमारा एक-एक अंग सिक्त हो गया अर्थात् गुरु ईश्वर का ज्ञान कराता है, उसकी भक्ति से अनुपम सन्तोष की प्राप्ति होती है और मन प्रेममय हो जाता है।

गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागूं पाय।
बलिहारी गुरु आपनो, गोविन्द दियो बताय॥

गुरु और ईश्वर दोनों मेरे सामने खड़े हैं, मैं किसके पाँव पहले पड़ूँ? कबीर कहते हैं कि हमें सर्वप्रथम गुरु के ही चरण-स्पर्श करने चाहिये जिन्होंने अपने ज्ञान के द्वारा हमें

ईश्वर के दर्शन कराये अर्थात् हमारा मार्ग प्रशस्त किया है।

जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाँहि।
सब अँधियारा मिटि गया, जब दीपक देख्या माँहि॥

कबीरदास जी कहते हैं कि जब तक मेरे मन में अहंकार की भावना थी, तब तक मैं परमात्मा से दूर ही रहा। जब से ईश्वर ने मेरे हृदय में प्रवेश किया है, तब से मेरा अहंकार समाप्त हो गया है। आगे कबीर कहते हैं कि ज्ञानरूपी दीपक के प्रकाश से मेरे हृदय का अज्ञानरूपी अंधकार मिट गया है।

राम नाम के पटतरे, देबे कौं कछु नाहिं।
क्या ले गुर संतोषिए, हौंस रही मन माँहिं॥

कबीर कहते हैं कि मेरे गुरु ने जो मुझे राम नाम का उपदेश दिया है उसकी समानता कोई नहीं कर सकता। राम का नाम देकर गुरु ने मुझ पर उपकार किया है। उसके बदले में मैं उन्हें दक्षिणा के रूप में क्या दूँ? मेरे पास देने के लिए कुछ भी नहीं है। मेरे मन में निरन्तर यही अभिलाषा है कि मैं गुरु को क्या दूँ, ताकि मुझे सन्तोष मिल सके।

ज्ञान प्रकास्या गुरु मिल्या, सो जिनि बीसरि जाइ।
जब गोविन्द कृपा करी, तब गुरु मिलिया आइ॥

कबीर कहते हैं कि सतगुरु के मिलने पर ज्ञान का प्रकाश फैल गया है। मेरी अभिलाषा है कि जिस गुरु ने मुझे ज्ञान दिया, वह मेरे हृदय से विस्मृत न हो जाये। कबीर का मत है कि मुझे सच्चा गुरु तभी प्राप्त हुआ जबकि मेरे ऊपर ईश्वर की

कृपा हुई।

माया दीपक नर पतँग, भ्रमि भ्रमि इवैं पड़ंत।
कहै कबीर गुरु ग्यान, एक आध उबरंत॥

कबीर कहते हैं कि माया रूपी दीपक के सामने मनुष्य पतंगे के समान है। जिस प्रकार पतंगा दीपक को देखकर उसकी तरफ दौड़ता है और उसमें गिरकर जल जाता है, ठीक उसी प्रकार मनुष्य भी माया के वशीभूत होकर अन्त में नष्ट हो जाता है। गुरु से ज्ञान प्राप्त करके मनुष्य माया के इस बन्धन से छूट जाता है, किन्तु इस ज्ञान को प्राप्त करके भी कोई विरला व्यक्ति ही मायारूपी दीपक की आग में जलने से बच पाता है।

गुरु गोविन्द तौ एक है, दूजा यहु आकार।
आपा मेटत्त जीवत मरैं, तौ पावै करतार॥

कबीर कहते हैं कि गुरु और ईश्वर वास्तव में एक ही हैं, दोनों में कोई अन्तर नहीं है। वास्तव में भौतिक शरीर उससे भिन्न है। अलग होने का कारण अहंकार है। यदि व्यक्ति अपने अहंकार को समाप्त कर दे तभी उसे ईश्वर की प्राप्ति हो सकती है।

दुख में सुमिरन सब करें, सुख में करे न कोय।
जो सुख में सुमिरन करे, दुःख काहे को होय॥

कबीर जी कहते हैं कि दुःख में तो परमात्मा को सब याद करते हैं परन्तु सुख में कोई याद नहीं करता। जो इसे सुख में भी याद करें तो दुःख का आगमन ही न हो।

माला फेरत जुग भया, फिरा ना मन का फेर।
कर का मन का डार दे, मन का मनका फेर॥

कबीर जी कहते हैं कि माला फेरते-फेरते युग बीत गया फिर भी मन का कपट दूर नहीं हुआ। हे मनुष्य! हाथ की माला छोड़कर अपने मनरूपी माला को फेराकर अर्थात् मन का सुधार कर।

साईं इतना दीजिए, जामें कुटुम्ब समाय।
मैं भी भूखा न रहूँ, साधु न भूखा जाय॥

कबीर जी कहते हैं कि हे ईश्वर! तुम मुझे इतना दो कि जिसमें सारे कुटुम्ब का जीवन निर्वाह हो जाए और मैं भी भूखा न रहूँ और कोई साधु भी मेरे घर से भूखा ना जाए।

सुख में सुमिरन ना किया, दुःख में किया याद।
वह कबीर ता दास की, कौन सुने फरियाद॥

कबीरदास जी कहते हैं कि जिसने सुख में तो ईश्वर को कभी स्मरण किया नहीं और दुःख में याद किया ऐसे दास की प्रार्थना कौन सुने अर्थात् भगवान उसी की सुनते हैं जो सुख और दुःख में समान भाव से रहता है।

कबीर माला मनहिं की, और संसारी भीख।
माला फेरे हरि मिले, गले रहट के देख॥

कबीर जी कहते हैं कि माला तो मन की होती है, बाकि तो सब लोक दिखावा है। अगर माला फेरने से ईश्वर के दर्शन

होते तो रहट के गले को देख, कितनी बार माला फिरती है उसे भगवान मिल जाते। अन्तर्मन के सुधार से ही परमात्मा की प्राप्ति होती है।

बलिहारी गुरु आपनो, घड़ी-घड़ी सौ सौ बार।
मानुष से देवत किया, करत न लागी बार॥

मैं बार-बार अपने गुरु की बलिहारी जाऊँ कि जिन्होंने थोड़े से प्रयत्न से ही मुझे मनुष्य से देवता बना दिया।

जाति न पूछो साधु की, पूछि लीजिए ज्ञान।
मोल करो तलवार का, पड़ा रहन दो म्यान॥

किसी साधु से उसकी जाति मत पूछो अपितु उससे ज्ञान की बातें पूछो। जिस प्रकार तलवार का मूल्य पूछा जाता है म्यान का नहीं।

लूट सके तो लूट ले, राम नाम की लूट।
पाछे फिर पछताओगे, प्राण जाहिं जब छूट॥

कबीर जी कहते हैं कि हे प्राणी इस जीवन में जितना हो सके ईश्वर का नाम ले लो, जब समय निकल जायेगा तो तू पछताएगा अर्थात् प्राण छूट जाने के पश्चात् ईश्वर का नाम कैसे जपेगा?

पाँच पहर धन्धे गया, तीन पहर गया सोय।
एक पहर हरि नाम बिनु, मुक्ति कैसे होय॥

कबीर जी कहते हैं कि हे मनुष्य! प्रतिदिन के आठ प्रहर

में से पाँच प्रहर तो तूने काम धन्धे में बिता दिये और तीन प्रहर सोकर बिता दिये। इस प्रकार तूने एक प्रहर भी हरि-भजन के लिये नहीं रखा फिर मोक्ष की प्राप्ति कैसे सम्भव है।

धीरे-धीरे रे मना, धीरे सब कुछ होय।
माली सींचे सौ घड़ा, ऋतु आये फल होय॥

हे मन! धीरे-धीरे सब कुछ हो जायेगा। माली सैकड़ों घड़े पानी पेड़ में देता है परन्तु फल ऋतु आने पर ही लगता है अर्थात् धैर्य रखने से और समय आने पर ही सब काम बनते हैं।

कबीर ते नर अन्ध हैं, गरु को कहते और।
हरि रूठे गुरु ठौर है, गुरु रूठे नहीं ठौर॥

कबीर जी कहते हैं कि वे मनुष्य अन्धे हैं जो गुरु को ईश्वर से छोटा मानते हैं क्योंकि ईश्वर के रुष्ट होने पर गुरु का सहारा तो है परन्तु गुरु के रुष्ट होने के बाद कोई ठिकाना नहीं रहता।

जहाँ दया तहाँ धर्म है, जहाँ लोभ तहाँ पाप।
जहाँ क्रोध तहाँ काल है, जहाँ क्षमा तहाँ आप॥

जहाँ दया है वहाँ धर्म है जहाँ लोभ है वहाँ पाप है, जहाँ क्रोध है वहीं काल है और जहाँ क्षमा है वहाँ तो स्वयं भगवान होते हैं।

क्षमा बड़न को चाहिये, छोटन को उत्पात।
कहा विष्णु का घट गयो, भृगु ने मारी लात॥

छोटे चाहे जितनी गलतियाँ करें, परन्तु बड़ों को उनके प्रति क्षमा भाव रखना चाहिए। भगवान् विष्णु का क्या बिगड़ गया जो भृगु ने लात मार दी थी अर्थात् क्षमा में ही बड़प्पन है।

शीलवन्त सबसे बड़ा, सब रतनन की खान।
तीन लोक की सम्पदा, रही शील में आन॥

जो शील स्वभाव का होता है मानो वो सब रत्नों की खान है क्योंकि तीनों लोकों की माया शीलवान (सदाचारी) व्यक्ति में ही आकर बसती है।

कबीरा सोया क्या करे, उठि न भजे भगवान।
जम जब घर ले जायेंगे, पड़ी रहेगी म्यान॥

कबीर जी कहते हैं कि हे प्राणी! तेरे सोते रहने से कोई लाभ नहीं, अतः अपनी चेतना को जगाकर ईश्वर का भजन कर, क्योंकि जिस समय यमदूत तुझे पकड़कर यमलोक ले जायेंगे तो तेरा यह शरीर म्यान के समान पड़ा रह जायेगा।

माया मरी न मन मरा, मर-मर गया शरीर।
आशा तृष्णा न मरी, कह गये दास कबीर॥

कबीर जी कहते हैं कि मनुष्य का मन तथा उसमें घुसी हुई माया का नाश नहीं होता है और न ही उसकी आशाएँ इच्छाएँ नष्ट होती हैं केवल दिखायी देने वाला शरीर ही मरता है। इसी कारण उसे मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती।

नींद निशानी मौत की, उठ कबीरा जाग।
और रसायन छाँड़ि के, नाम रसायन लाग॥

कबीर कहते हैं कि हे प्राणी! उठ जाग, नींद तो मौत की निशानी है। दूसरे रसायनों को छोड़कर तू ईश्वर के नाम रूपी रसायन में मन लगा।

रात गंवाई सोय के, दिवस गंवाया खाय।
हीना जन्म अनमोल था, कौड़ी बदले जाय॥

रात सोकर गंवा दी और दिन खा-पीकर गँवा दिया। यह हीरे जैसा अनमोल मनुष्य शरीर कोड़ियों के बदले जा रहा है अर्थात् हे मनुष्य! जीवन को सार्थक बनाने के लिये ईश्वर का ध्यान कर।

माटी कहे कुम्हार से, तू क्यों रौंदे मोय।
इक दिन ऐसा आयेगा, मैं रौंदूँगी तोय॥

मिट्टी कुम्हार से कहती है कि तू मुझे क्या रौंदता है। एक दिन ऐसा आएगा कि मैं ही तुझे रौंदूँगी अर्थात् मनुष्य के मरने के बाद उसका शरीर मिट्टी में मिल जाता है।

काल करे सो आज कर, आज करे सो अब।
पल में प्रलय होयगी, बहुरि करेगा कब॥

कबीर जी कहते हैं कि हे मनुष्य! जो काम कल करना है वो आज करो और जो काम आज करना है वह अभी कर लो। क्षणभर में यदि प्रलय (मृत्यु) हो गई तो फिर बाकी पड़ा हुआ काम कब करेगा?

आये हैं सो जायेंगे, राजा रंक फकीर।
एक सिंहासन चढ़ि चले, एक बंधे जात जंजीर॥

जिसका जन्म हुआ है उसका मरना निश्चित है चाहे वह राजा हो या कंगाल। लेकिन एक तो सिंहासन पर जायेगा और एक जंजीरों में बँधा हुआ अर्थात् मनुष्य के साथ उसकी अच्छाई या बुराई ही साथ जाती है।

दुर्लभ मानुष जन्म है, देह न बारम्बार।
तरुवर ज्यों पत्ती झड़े, बहुरि न लागे डार॥

यह मनुष्य जन्म बड़ी मुश्किल से मिलता है और यह देह बार-बार नहीं मिलती। ठीक उसी प्रकार जैसे पेड़ से पत्ता झड़ जाने के बाद फिर डाल पर नहीं लग सकता है। अतः इस मनुष्य जीवन को सार्थक करो।

जो तोकू काटाँ बुवे, ताहि बोय तू फूल।
तोकूं फूल के फूल हैं, वाकूं हैं त्रिशूल॥

जो तेरे साथ बुराई करे तू उनके साथ भी अच्छाई कर अर्थात् हे मनुष्य तू सबके लिये भला कर। जो तेरे लिये बुरा करते हैं वह स्वयं अपने दुष्कर्मों का फल पायेंगे।

माया छाया एक सी, बिरला जाने कोय।
भगता के पीछे लगे, सम्मुख भागे सोय॥

माया और छाया एक समान है। इसे कोई-कोई ही जानता है, यह भागने वालो के पीछे ही भागती है परन्तु जो सम्मुख खड़ा होकर सामना करते हैं तो वह स्वयं ही भाग जाती है।

जहां आपा तहाँ आपदा, जहाँ संशय तहाँ रोग।
कह कबीर यह क्यों मिटे, चारों धीरज रोग॥

कबीर जी कहते हैं कि जहाँ मनुष्य में अहंकार है उस पर आपत्तियाँ आने लग जाती हैं और जो शक करता है उसे रंज और चिन्ता जैसे रोग हो जाते हैं। इन चारों रोगों का इलाज धैर्य से सम्भव है।

माँगन मरण समान है, मति माँगो कोई भीख।
माँगन ते मरना भला, यह सतगुरु की सीख॥

माँगना मरने के बराबर है, अतः किसी से भीख मत माँगो। सतगुरु की शिक्षा हैं कि माँगने से मर जाना बेहतर है अर्थात् हे मनुष्य! पुरुषार्थ से प्रत्येक वस्तु स्वयं प्राप्त करने के लिये सक्षम बन।

दुर्बल को न सताइये, जाकी मोटी हाय।
बिना जीव की सांस सों, लोह भस्म हो जाय॥

कमजोर को कभी नहीं सताना चाहिये। जिसकी हाय बहुत बड़ी होती है जैसा आपने देखा होगा कि निर्जीव खाल की धोंकनी की सांस से लोहा भी भस्म हो जाता है।

गारी ही सों ऊपजे, कलह, कष्ट और मींच।
हारि चले सो साधु हैं, लागि चले सो नीच॥

गाली अर्थात् दुर्वचनों से ही क्लेश, दुःख तथा मृत्यु उत्पन्न होते है। जो गाली सुनकर हार मानकर चला जाय वही सज्जन है, इसके विपरीत जो गाली देने के बदले में गाली देने लग जाता है वह नीच प्रकृति का है।

क्या भरोसा देह का, बिनस जात छिन मांह।
सांस-सांस सुमिरन करो और यतन कछु नाँह॥

इस शरीर का क्या भरोसा है यह तो पल-पल में क्षीण होता जा रहा है अतः अपनी हर सांस पर ईश्वर का स्मरण करो यही मोक्ष प्राप्त करने का उपाय है।

आया था किस काम को, तू सोया चादर तान।
सूरत सम्भल ए गाफिल, अपना आपा पहचान॥

कबीर जी कहते हैं कि हे लापरवाह इन्सान! तू चादर तान कर सो रहा है, अपनी चेतना को जगा और अपने को पहचान कि तू कौन है? तथा किस काम के लिये तू इस संसार में जन्मा है? अर्थात् स्वयं के अस्तित्व को जान और सत्कार्यों में लग जा।

ऐसी वाणी बोलिए, मन का आपा खोय।
औरन को शीतल करे, आपहु शीतल होय॥

कबीरदास कहते हैं कि हमें मन से अहंकार को मिटाकर मधुर-वचन बोलने चाहिए जो सबको सुखकर लगते हैं और स्वयं को भी प्रसन्नता का अनुभव होता है।

कुटिल वचन सबसे बुरा, जारि कर तन छार।
साधु वचन जल रूप, बरसे अमृत धार॥

कठोर वचन बोलना सबसे बुरा है क्योंकि यह तन को जलाकर राख कर देते हैं और सज्जन की बात जल के समान है इससे अमृत वर्षा होती है और दूसरों को लाभ पहुँचता है।

जग में बैरी कोई नहीं, जो मन शीतल होय।
यह आपा तो डाल दे, दया करे सब कोय॥

यदि तुम्हारे मन में शान्ति है तो संसार में कोई तुम्हारा शत्रु नहीं है। यदि तू अपने अहंकार को त्याग दे तो सब तुम्हारी सहायता करेंगे।

बाणी से पहचानिये, साम चोर की घात।
अन्दर की करनी से सब, निकले मुँह की बात॥

सज्जन और दुष्ट को उसकी बातों से पहचाना जाता है क्योंकि उसके अन्तर्मन का उसकी बातों द्वारा पता चल जाता है। व्यक्ति जैसे कर्म करता है उसी के अनुसार उसका व्यवहार बनता है।

दस द्वारे का पिंजरा, तामें पंछी कौन।
रहे को अचरज है, गये अचम्भा कौन॥

यह शरीर दस दरवाजों का पिंजरा है इसमें आत्मा रूपी पंछी है। हमें इसमें रहने से आश्चर्य होता है। यदि यह इस शरीर से निकल जाये तो आश्चर्य क्यों? अर्थात् मनुष्य की मृत्यु कोई आश्चर्य की बात नहीं हैं।

दान दिए धन ना घटे, नदी ना घटे नीर।
अपनी आँखों देख लो, यों क्या कहे कबीर॥

कबीरदास जी कहते हैं कि यह आँखों देखी बात है कि नदी का पानी पीने से कम नहीं होता इसी प्रकार दान देने से धन में कमी नहीं आती।

मैं रोऊँ सब जगत को, मोको रोवे न कोय।
मोको रोबे सोचना, जो शब्द बोय की होय॥

कबीरदास जी कहते हैं कि मैं तो सबके दुःख में दुःखी होता हूँ परन्तु मेरा दर्द कोई नहीं जानता। मेरा दर्द वही देख सकता है जो मेरी वाणी को समझता है।

हीरा तहाँ न खोलिए, जहाँ कुंजड़ों की हाट।
बांधो चुप की पोटरी, लागहु अपनी बाट॥

अपने हीरे (शिक्षा) को लापरवाहों को देकर अपना समय क्यों व्यर्थ गंवाते हो। जब तुम कद्रदान नहीं पाते तो अपनी बहुमूल्य सीख गाँठ में बाँधों और अपना कार्य करो।

बाजीगर का बांदरा, ऐसा जीव मन के साथ।
नाना नाच दिखाय कर, राखे अपने साथ॥

जिस प्रकार बाजीगर अपने बन्दर से तरह-तरह के नाच दिखाकर उन्हें अपने साथ रखता है उसी प्रकार मन भी जीव के साथ है वह भी प्राणी को अपने इशारे पर नचाता है।

अवगुन कहूँ शराब का, आपा अहमक साथ।
मानुष से पशुआ करे, दाम गाँठ से खात॥

कबीर जी कहते हैं कि मैं शराब को बुरा मानता हूँ। व्यक्ति शराब पीकर अपने होश खो बैठता है। वह मूर्ख और जानवर बन जाता है तथा उसके पास धन का अभाव हो जाता है अर्थात् शराब सब बुराइयों की जड़ है इससे दूर रहने में ही भलाई है।

सोता साधु जगाइये, करे नाम का जाप।
यह तीनों सोते भले, साकित सिंह और साँप॥

यदि साधु सोता है तो उसे जगा देना चाहिये ताकि भजन करे लेकिन अधर्मी, शेर और साँप को नहीं जगाना चाहिए क्योंकि ये तीनों जागते ही लोगों को कष्ट पहुँचाते हैं।

वैद्य मुआ रोगी मुआ, मुआ सकल संसार।
एक कबीरा ना मुआ, जेहि के राम अधार॥

कबीरदास जी कहते हैं कि रोगी मर गया और जिस वैद्य से उसकी चिकित्सा हो रही थी वह भी मर गया यहाँ तक कि यह सम्पूर्ण संसार भी नश्वर है परन्तु जिसे राम नाम का आसरा था वह अमर है अर्थात् राम नाम सत्य है बाकि सब मिथ्या है।

पतिव्रता मैली भली, काली कुचल कुरूप।
पतिव्रता के रूप पर, वारो कोटि सरूप॥

कबीरदास जी कहते हैं कि पतिव्रता स्त्री चाहे मैली कुचैली और कुरूपा ही क्यों न हो लेकिन उसके पतिव्रता गुण पर सारी सुन्दरताएँ न्यौछावर हो जाती हैं।

कबीरा जपना काठ की, क्या दिखलावे मोय।
हृदय नाम न जपेगा, यह जपनी क्या होय॥

कबीरदास जी कहते हैं कि लकड़ी की माला जपने से क्या लाभ है जब तक उसमें मन संलग्न नहीं है। अत: मन से हरि का स्मरण कर, बिना मन लगे जाप व्यर्थ है।

अटकी भाल शरीर में, तीर रहा है टूट।
चुम्बक बिना निकले नहीं, कोटि पट्ठन को फूट॥

जिस प्रकार शरीर में तीर की भाल अटक जाती है और वह चुम्बक के बिना नहीं निकल सकती। इस प्रकार तुम्हारे मन में जो बुराई है वह सच्चे गुरु के अभाव में नहीं निकल सकती अर्थात् पथ-प्रदर्शन के लिये सच्चा गुरु आवश्यक है।

जाके जिव्या बन्धन नहीं, हृदय में नहीं सांच।
वाके संग न लागिये, खाले वटिया काँच॥

जिसकी जीभ अपने वश में नहीं और मन में सच्चाई नहीं ऐसे व्यक्ति के साथ रहकर तुझे कुछ प्राप्त नहीं हो सकता। ऐसे मनुष्य का साथ छोड़ देना चाहिए।

राम रहे बन भीतरे, गुरु की पूजी ना आस।
कहे कबीर पाखण्ड सब, झूठे सदा निराश॥

बिना गुरु की सेवा किये और बिना गुरु की शिक्षा के जिन झूठे लोगों ने यह जान लिया कि राम वन में रहता है, वह सब पाखण्ड है। झूठे सदा परमात्मा को खोजने में असमर्थ रहते हैं।

हद चले सो मानव, बेहद चले सो साध।
हद बेहद दोनों तजे, ताको मता अगाध॥

जो मनुष्य सीमा तक कार्य करता है वह मनुष्य है जो सीमा से बाहर कार्य की परिस्थिति में ज्ञान बढ़ाते हैं वह साधु हैं और जो सीमा से अधिक कार्य करता है, विभिन्न विषयों में जिज्ञासावश साधना करता रहता है उसका ज्ञान अथाह है।

हंसा मोती बिबन्या, कञ्चन थार भराय।
जो जन मार्ग न जाने, सो तिस कहा कराय॥

सोने के थाल में मोती भरे हुये बिक रहे हैं लेकिन जो उनकी कद्र नहीं जानते वह क्या करें उन्हें तो हंस रूपी जौहरी हीं बीन सकता है।

समझाये समझे नहीं, पर के हाथ बिकाय।
मैं खींचत हूँ आपके, तू चला जमपुर जाय॥

कबीर जी कहते हैं कि मैं (ईश्वर) तुझे अपनी ओर खींचता है परन्तु तू तो दूसरों के हाथों बिका जा रहा है और यमपुर की ओर जा रहा है। मेरे बहुत समझाने पर भी नहीं समझता।

सुमरण से मन लाइये, जैसे पानी बिन मीन।
प्राण तजे बिन बिछड़े, सन्त कबीर कह दीन॥

कबीरदास जी कहते हैं जैसे मछली बिना पानी के जीवित नहीं रह सकती ऐसे ही ईश्वर स्मरण के बिना मनुष्य मोक्ष प्राप्त नहीं कर सकता है। अत: सबको हर समय ईश्वर स्मरण में लगे रहना चाहिए।

तीरथ गये ते एक फल, सन्त मिले फल चार।
सतगुरु मिले अनेक फल, कहें कबीर विचार॥

कबीरदास का विचार है कि तीर्थ करने से एक फल की प्राप्ति होती है और संत की संगत से चार फल की, परन्तु

सच्चा गुरु मिलने से अनेक फलों की प्राप्ति होती है। इसलिए हमें सच्चे गुरु की तलाश करनी चाहिए।

कली खोटा जग आंधरा, शब्द न माने कोय।
चाहे कहूँ सत आइना, सो जग बैरी होय॥

कबीरदास जी कहते हैं कि मेरी बात को कोई नहीं मानता बल्कि जिसको भी भली (कल्याणकारी) बात कहता हूँ वही मेरा शत्रु हो जाता है क्योंकि कलियुग ने अपने प्रभाव से सारे जग को अन्धा बना रखा है।

वस्तु है ग्राहक नहीं, वस्तु सागर अनमोल।
बिना करम का मानव, फिरैं डांवाडोल॥

ज्ञान जैसी अमूल्य वस्तु तो विद्यमान है परन्तु उसको प्राप्त करने वाला कोई नहीं है। क्योंकि ज्ञान बिना कर्म किये नहीं मिलता इसी कारण प्राणी इधर-उधर भटकता रहता है। अत: भक्ति और सेवा करने पर ही ज्ञान की प्राप्ति सम्भव है।

उज्जवल पहरे कापड़ा, पान सुपारी खाय।
एक हरि के नाम बिन, बाँधा यमपुर जाय॥

मनुष्य साफ-सुथरे कपड़े पहनता है और पान सुपारी खाकर अपने तन को सुगन्धित भी रखता है परन्तु हरि का नाम न लेने पर यमदूत द्वारा बंधा हुआ नरक को जाएगा अर्थात् मनुष्य को स्वयं को ईश्वर स्मरण से वंचित नहीं रखना चाहिए।

कहना था सो कह चले, अब कुछ कहा ना जाए।
एक रहा दूजा गया, दरिया लहर समाय॥

जिस प्रकार नदी की लहरें फिर नदी में मिल जाती हैं उनका अपना कोई अस्तित्व नहीं होता ठीक इसी प्रकार मनुष्य भी मरणोपरान्त परमात्मा में लीन हो जाता है यही सत्य है और इसके अतिरिक्त कुछ नहीं कहा जा सकता।

साधु ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय।
सार सार को गहि रहे, थोथा देइ उड़ाय॥

साधु को छाज जैसे स्वभाव का होना चाहिए। छाज का गुण है कि वह सत वाले दाने को रख लेता है और थोथा उड़ा देता है। वैसे ही मनुष्यों को भी ईश्वर का भजन और परोपकार करना चाहिए। व्यर्थ के माया-मोह को छोड़ देना चाहिए।

जागन में सोवन करे, साधन में लौ लाय।
सुरत डोर लागी रहै, तार टूट नहिं जाय॥

मनुष्य को सोते हुये भी ईश्वर से लौ लगाये रखनी चाहिए। कहीं ऐसा न हो कि ईश्वर भजन का तार टूट जाये। अर्थात् जीव को जागते-सोते प्रतिपल ईश्वर का नाम स्मरण करना चाहिए।

काम, क्रोधी, लालची, इनसे भक्ति न होय।
भक्ति करे कोई सूरमा, जाति वरन कुल खोय॥

कामी, क्रोधी और लालची इनसे ईश्वर भक्ति नहीं हो सकती। भक्ति तो कोई शूरवीर ही कर सकता है जिसे जाति, वर्ण और कुल का मोह न हो।

घट का परदा खोलकर, सन्मुख दे दीदार।
बाल सनेही साइयाँ, आवा अन्त का यार॥

बचपन का मित्र और आरम्भ से अन्त तक का मित्र जो सदैव तुझमें विराजमान है उसे जरा अन्दर के परदे को दूर करके तो देख तो तुझे अपने समक्ष ईश्वर के दर्शन होंगे।

भक्ति गेंद चौगान की, भावे कोई ले जाय।
कह कबीर कछु भेद नहि, कहाँ रंक कहां राय॥

कबीरदास कहते हैं कि भक्ति तो पोलो की गेंद के समान है चाहे जो ले जाये। चाहे राजा या कंगाल भक्ति में किसी से कोई भेद नहीं समझा जाता चाहे कोई भी ले जाये अर्थात् यह तो कर्म पर निर्भर है जो करेगा वही पायेगा।

लगी लग्न छूटे नहिं, जीभ चोंच जरि जाय।
मीठा कहा अंगार में, जाहि चकोर चबाय॥

जिस वस्तु को पाने की किसी को लगन होती है वह उसे नहीं छोड़ता। चाहे उसे पाने में कितनी मुसीबत उठानी पड़े। जैसे अंगारे में क्या मीठा होता है जिसको चकोर चबाता है? अर्थात् चकोर की जीभ, चोंच भले ही जल जाये तो भी वह अंगारे को नहीं छोड़ता वैसे ही भक्त को जब ईश्वर की लौ लग जाती है तो चाहे उसे कितना कष्ट क्यों न हो वह ईश्वर भजन नहीं छोड़ता।

प्रेम प्याला जो पिये, शीश दक्षिणा देय।
लोभी शीश न दे सके, नाम प्रेम का लेय॥

जो प्रेम का प्याला पीना चाहता है तो वह दक्षिणा में सिर भी देना जानता है। लोभी सिर नहीं दे सकता उसमें इतना साहस नहीं, प्रेमी के लिये मर नहीं सकता वैसे प्रेम का नाम लेता है।

प्रेम न बाड़ी उपजै, प्रेम न हाट बिकाय।
राजा प्रजा जेहि रुचे, शीश देई ले जाय॥

प्रेम न बागों में उपजता है, न बाजार में बिकता है। राजा या प्रजा जिसे प्रेम अच्छा लगे वह सिर देकर अर्थात् स्वयं को न्यौछावर करके इसे पा सकता है। कुछ पाने के लिये कुछ खोना पड़ता है।

मैं अपराधी जन्म का, नख सिख भरा विकार।
तुम दाता दुःख भंजना, मेरी करो सम्हार॥

मैं जन्म से अपराधी हूँ मुझमें नख से सिर तक दोष भरा हुआ है। तुम दाता (भगवान) हो, कष्टों को हरने वाले हो, तुम ही मुझे सम्भालो, मेरा कल्याण करो।

अन्तर्यामी एक तुम, आत्मा के आधार।
जो तुम छोड़ो हाथ तो, कौन उतारे पार॥

हे अन्तर्यामी! आप ही आत्मा का आसरा हो यदि तुम्हीं हाथ छोड़ दोगे तो कौन हमें संसाररूपी भवसागर से पार करायेगा।

जो तिल माही तेल हैं, ज्यों चकमक में आग।
तेरा साईं तुझमें, बस जाग सके तो जाग॥

जिस प्रकार तिलों में तेल और चकमक पत्थर में आग छुपी रहती है उसी प्रकार परमात्मा भी तेरे अन्दर विद्यमान है। अतः अपनी चेतना को जगा स्वयं को पहचान और ईश्वर के दर्शन कर।

छीर रूप सत नाम है, नीर रूप व्यवहार।
हंस रूप कोई साधु है, सत का छाननहार॥

परमात्मा का सच्चा नाम दूध रूप है। संसार का व्यवहार जल रूप है। इनमें से तत्व को निकालने वाला साधु हंस रूप है, जो दूध पी जाता है और जल छोड़ देता है अर्थात् अच्छाइयों को ग्रहण कर लेता बुराइयों को छोड़ देता है।

सुमरित सुरत जगाय कर, मुख से कछु न बोल।
बाहर का पट बन्द कर, अन्दर का पट खोल॥

हे मनुष्य! तू एकाग्रचित्त होकर ईश्वर का स्मरण कर और मुख से कुछ न बोल। तू लोक दिखावा त्यागकर अपने सच्चे दिल से ईश्वर का भजन कर।

सुमिरन सो मन लाइये, जैसे नाद कुरंग।
कहैं कबीर बिसरे नहीं, प्रान तजे तेहि संग॥

कबीर दास जी कहते हैं कि ईश्वर स्मरण में इस प्रकार मन को लगाओ जैसे हिरन संगीत सुनने में इतना तल्लीन हो जाता है कि उसे शिकारी के आने का भी पता नहीं रहता यहाँ तक कि प्राण भी उसी संगीत में दे देता है। अतः तू ईश्वर में अटूट श्रद्धा रख।

नही शीतल है चन्द्रमा, हिम नही शीतल होय।
कबीरा शीतल सन्त जन, नाम सनेही सोय॥

कबीरदास जी कहते हैं कि न तो शीतलता चन्द्रमा में है न ही शीतलता बर्फ में है, वो ही सज्जन शीतल हैं जो परमात्मा के स्नेही हैं अर्थात् मन की शान्ति हरि-नाम में है।

जबहि नाम हिरदे धरा, भया पाप का नाश।
मानो चिंगारी आग की, परी पुरानी घास॥

कबीर जी कहते हैं कि ईश्वर का नाम स्मरण करते ही पापों का नाश हो जाता है जैसे आग की चिंगारी पुरानी घास पर गिरते ही घास को जला देती है, इसी प्रकार ईश्वर का नाम लेते ही सारे पाप तुरन्त नष्ट हो जाते हैं।

जा कारण जग ढूँढिया, सो तो घट की माहिं।
परदा दिया भरम का, ताते सूझे नाहिं॥

कबीरदास जी कहते हैं कि हे जीव! जिस ईश्वर को तू सारे संसार में ढूँढ़ता फिरता है वह तो तेरे अन्दर ही उपस्थित है। तेरे अन्दर भ्रम का परदा पड़ा हुआ है, इसी कारणवश तुझे हरिदर्शन नहीं होते।

दिल का मरहम ना मिला, जो मिला सो गर्जी।
कह कबीर आसमान फटा, क्यों कर सीवें दर्जी॥

कोई भी मेरे हृदय के मर्म को जानने वाला न मिला जो भी मिले सब स्वार्थी मिले। अत: मेरा मनरूपी आकाश फट गया जिसे कोई दर्जी भी नहीं सी सकता। वह तो तब ही ठीक होगा

जब कोई हृदय-स्पर्शी मिले।

जल ज्यों प्यास माछरी, लोभी प्यारा दाम।
माता प्यारा बारका, भगति प्यारा नाम॥

कबीर अपनी बात का समर्थन करते हुये कहते हैं कि जैसे मछली को पानी प्रिय लगता है, लोभी को धन और माता को अपना बालक प्रिय लगता है वैसे ही भक्त को ईश्वर प्रिय लगता है।

जब लग नाता जगत का, तब लग भगति न होय।
नाता जोड़े हरि भजे, भगत कहावें सोय॥

जब तक मन सांसारिक वस्तुओं में आसक्त है तब तक भक्ति नहीं हो सकती। जो इस आसक्ति को त्याग दे और हरिभजन करे वही भक्त कहलाते हैं।

आहार करे मनभावना, इंद्री किए स्वाद।
नाक तिलक पूरन भरे, तो का कहिए प्रसाद॥

जो मनुष्य इन्द्रियों के स्वाद के लिये नाक तक भरकर खाये तो वह प्रसाद कहाँ रहा? अर्थात् भोजन शरीर की रक्षा के लिये सोच विचार कर करे तभी उचित है। सांसारिक भोग ईश्वर का प्रसाद समझकर ग्रहण करें।

फूटी आँख विवेक की, लखे ना सन्त असन्त।
जाके संग दस बीस है, ताको नाम महन्त॥

जिनकी ज्ञानरूपी आँखें फूटी हुई हैं वह सज्जन दुर्जन में भेद कैसे करे? उनकी स्थिति यह है कि जिसके साथ दस बीस

चेले देखे उसीको महात्मा समझ लिया।

जब लगि भगति सकाम है, तब लग निष्फल सेव।
कह कबीर वह क्यों मिले, निष्कामी तज देव॥

जब तक भक्ति इच्छापूर्ति के लिये है तब तक ईश्वर सेवा व्यर्थ है अर्थात् भक्ति निःस्वार्थ भाव से करनी चाहिये। तब ही परमात्मा को पाया जा सकता है।

छिन हीं चढ़े छिन ही उतरे, सो तो प्रेम न होय।
अघट प्रेम पिंजरे बसे, प्रेम कहावे सोय॥

जो प्रेम पल में उतरे और पल में चढ़े वह प्रेम नहीं है। जो प्रेम कभी कम नहीं होता, हरदम शरीर की हड्डियों तक में समाया रहता है वही वास्तविक प्रेम है।

दया कौन पर कीजिये, का पर निर्दय होय।
साईं के सब जीव हैं, कीरी कुंजर दोय॥

किस पर दया करनी चाहिये किस पर निर्दयता करनी चाहिये? हे मनुष्य! तू समस्त प्राणियों पर दया भाव रख। चींटी हो या कुंजर (हाथी) सब पर समभाव रख। सभी परमात्मा के जीव हैं।

दया भाव हृदय नहीं, ज्ञान थके बेहद।
ते नर नरक ही जायेंगे, सुनि-सुनि साखी सबद॥

जिनके हृदय में दया तो लेशमात्र नहीं और वह ज्ञान की बातें खूब करते हैं, वे आदमी चाहे जितनी साखी क्यों न सुने उन्हें नरक ही मिलेगा।

सबसे लघुताई भली, लघुता ते सब होय।
जैसे दूज का चन्द्रमा, शीश नवे सब कोय॥

सबसे छोटा बनकर रहने में सब काम आसानी से बन जाते हैं जैसे दूज के चाँद को सब सिर झुकाते हैं।

कबीरा धीरज के धरे, हाथी मन भर खाय।
टूट एक के कारने, स्वान घर घर जाय॥

धैर्य रखने के कारण ही हाथी मन भर खाता है परन्तु धैर्य न रखने के कारण कुत्ता एक-एक टुकड़े के लिये घर-घर मारा फिरता है।

ऊँचे पानी ना टिके, नीचे ही ठहराय।
नीचा हो सो भरि पिए, ऊँचा प्यासा जाय॥

पानी ऊँचे पर नहीं ठहरता वह नीचे ही फैलता है। जो नीचा झुकता है, वह भरपेट पानी पी सकता है जो ऊँचा ही खड़ा रहे वह प्यासा रह जाता है।

जहाँ काम तहाँ नाम नहिं, जहाँ नाम नहि वहाँ काम।
दोनों कबहूँ नहिं मिले, रवि रजनी इक धाम॥

जिसके मन में कामना है वहाँ ईश्वर नहीं, जहाँ हरिनाम है वहाँ कामनाएँ मिट जाती हैं। जिस प्रकार सूर्य और रात्रि नहीं मिल सकते इसी प्रकार जिस मन में ईश्वर का स्मरण है वहाँ कामनाएँ नहीं रह सकतीं।

मार्ग चलते जो गिरे, ताको नाहिं दोष।
यह कबीरा बैठा रहे, तो सिर करड़े कोष॥

मार्ग में चलते-चलते जो गिर पड़े उसका कुछ दोष नहीं, परन्तु जो बैठा ही रहेगा उसके सिर पर कठिन कोस बने ही रहेंगे। अर्थात् कार्य करने में बिगड़ जाये तो उसे सुधारने का प्रयास करें, परन्तु कार्य को न करना अधिक दोषपूर्ण है।

सत ही में सत बांटई, रोटी में ते टूक।
कहे कबीर ता दास की, कबहूँ न आवे चूक॥

जो आदमी सच्चाई को बाँटता है अर्थात् सच्चाई का प्रचार करता है और रोटी बाँटकर खाता है। कबीरदास जी कहते है कि उस भक्त से कभी भूल चूक नहीं होती।

फल कारण सेवा करे, करे न मन से काम।
कहें कबीर सेवक नहीं, चहै चौगुना दाम॥

जो मनुष्य अपने मन में फल की इच्छा रखकर सेवा करता है वह सेवक नहीं, वह तो सेवा के बदले कीमत चाहता है, सेवा तो निःस्वार्थ भाव से होनी चाहिए।

बाहर क्या दिखलाए, अन्तर जपिये राम।
कहा काज संसार से, तुझे धनी से काम॥

हे जीव तुझे लोक दिखावे से क्या काम और न ही धनी से तुझे कुछ काम होना चाहिये। तुझे सिर्फ अपने भगवान से काम है इसलिए मन से प्रभु का नाम स्मरण किये जा।

सुख सागर का शील है, कोई न पावे थाह।
शब्द बिना साधु नहीं, द्रव्य बिना नहीं शाह॥

शील स्वभाव सुख का सागर है जिसकी थाह कोई नहीं पा सकता है। जिस प्रकार धन के अभाव के कारण कोई शाह (बादशाह) नहीं कहलाता उसी प्रकार हरिभजन के बिना कोई साधु भी नहीं हो सकता।

काया काठी काक्ष घुन, जतन-जतन सों खाय।
काया वैद्य ईश बस, मर्म न काहू पाय॥

शरीर रूपी काठ को काल रूपी घुन निरन्तर खाये जा रहा है परन्तु इस शरीर में ईश्वर का वास है यह रहस्य कोई बिरला ही जानता है।

सोना, सज्जन, साधु जन, टूट जुड़ै सो बार।
दुर्जन कुम्भ कुम्हार के, ऐके धका दरार॥

सोना (स्वर्ण) सज्जन और साधु तीनों अच्छे हैं क्योंकि यह सैकड़ों बार टूटते हैं और जुड़ते हैं। लेकिन जो कुम्हार के घड़े की भाँति एक बार टूटकर नहीं जुड़ते अर्थात् जो बुरे हैं वह विपत्ति के समय धैर्य खो बैठते हैं।

आवत गारी एक है, उलटत होय अनेक।
कब कबीर नहिं उलटिये, वही एक की एक॥

जब कोई दूसरा गाली देता है तो एक होती है परन्तु उसके बदले गाली देने पर वह बहुत हो जाती हैं। कबीरदास जी

कहते हैं कि गाली के बदले में यदि उलट कर गाली न दोगे तो गाली एक की एक ही रहेगी।

कबीरा यह तन जात है, सके तो ठौर लगा।
कै सेवा कर साधु की, कै गोविन्द गुन गा॥

कबीरजी कहते हैं कि हे मनुष्य! तेरा यह तन जा रहा है हो सके तो इसे ठिकाने लगा ले अर्थात् सारा जीवन व्यर्थ जा रहा है। इसे सन्त सेवा और गोविन्द का भजन करके अच्छा बना ले।

कथा कीर्तन कुल विशे, भवसागर की नाव।
कहत कबीरा या जगत में, नाहिं और उपाव॥

कबीरदास जी कहते हैं कि संसार रूपी भवसागर से पार उतरने के लिए कथा-कीर्तन रूपी नाव चाहिए इसके अतिरिक्त पार उतरने का और कोई उपाय नहीं है।

तेरा साईं तुझ में, ज्यों पहुपन में बास।
कस्तूरी का हिरन ज्यों, फिर-फिर ढूँढत घास॥

हे मनुष्य! तेरा ईश्वर तेरे अन्दर व्याप्त है जैसे पुष्पों में सुगन्धि व्याप्त होती है। परन्तु जिस प्रकार कस्तूरी वाला हिरण अपने अन्दर छिपी हुई कस्तूरी को अज्ञानवश घास में ढूँढ़ता है उसी प्रकार तू भी परमात्मा को इधर-उधर खोजता फिरता है।

कहता तो बहुत मिला, गहता मिला न कोय।
सो कहता वह जान दे, जो नहिं गहता होय॥

कबीर जी कहते हैं कि कहने वाले तो बहुत मिलते हैं परन्तु वास्तविक बात को समझाने वाला कोई नहीं मिलता यदि वास्तविक ज्ञान बताने वाला कोई नहीं तो उसके कहे अनुसार चलना व्यर्थ है।

जँह गाहक ता हूँ नहीं, जहाँ मैं गाहक नांय।
मूरख यह भरमत फिरे, पकड़ शब्द की छांय॥

जिस स्थान पर ग्राहक है वहाँ मैं नहीं हूँ और जहाँ मैं हूँ वहाँ ग्राहक नहीं है अर्थात् मेरी बात को मानने वाले नहीं हैं लोग बिना ज्ञान के इधर-उधर भटकते फिरते हैं।

आस पराई राखत, खाया घर का खेत।
औरन को पत बोधता, मुख में पड़ा रेत॥

हे मनुष्य! तू दूसरों के घर की रखवाली करता है और अपने घर को नहीं देखता अर्थात् तू दूसरों को ज्ञान सिखाता है और स्वयं क्यों नहीं परमात्मा का भजन करता।

तब लग तारा जगमगे, जब लग उगे न सूर।
तब लग जीव जग कर्मवश, ज्यों लग ज्ञान ना पूर॥

जब तक सूर्य उदय नहीं होता तब तक तारा चमकता रहता है। ठीक इसी प्रकार जब तक जीव को पूर्ण ज्ञान नहीं हो जाता तब तक वह कर्म के अधीन रहता है।

आग जो लागी समुद्र में, धुआँ ना प्रकट होय।
सो जाने जो जरमुआ, जाकी लाई होय॥

जिस प्रकार समुद्र में आग लग जाने पर उसमें धुआँ प्रकट नहीं होता उसी प्रकार जब मन में प्रेम की अग्नि प्रज्वलित होती है तो दूसरा उसे नहीं जान पाता या तो वह जानता है जिसके हृदय में अग्नि लगी है या आग लगाने वाला जानता है।

बलिहारी वा दूध की, जामें निकसे घीव।
घी साखी कबीर की, चार वेद का जीव॥

कबीरदास जी कहते हैं कि मैं दूध का सम्मान करता हूँ जिसमें घी निकलता है जिस प्रकार दूध में घी है उसी प्रकार मेरी साखी चारों वेदों का निचोड़ है।

सब धरती कारज करूँ, लेखनी सब वनराय।
सात समुद्र की मसि करूँ, गुरुगुन लिखा न जाय॥

कबीर जी गुरु की महत्ता को दर्शाते हुये कहते हैं कि मैं चाहे सारी पृथ्वी को कागज बनाऊँ, सारे जंगलों के वृक्षों की कलम बनाऊँ और सातों समुद्र की स्याही बनाऊँ तो भी गुरु के यश का गुणगान नहीं लिख सकता।

साधु गांठि न बांधई, उदर समाता लेय।
आगे पीछे हरि खड़े, जब मांगे तब देय॥

साधु कभी गांठ नहीं बाँधता अर्थात् जोड़कर नहीं रखता। वह तो पेट भर अन्न लेता है क्योंकि उसे इस बात का ज्ञान है कि ईश्वर उसके आसपास ही उपस्थित है अर्थात् परमात्मा सर्वव्यापी है। प्राणी जब माँगता है तब वह उसे दे देता है।

सब आए इस एक में, डाल पात फल फूल।
कबीरा पीछा क्या रहा, गह पकड़ी जब मूल॥

कबीर जी कहते हैं कि जड़ के द्वारा ही डाल, पत्ते और फल-फूल लगते हैं। अतः जब जड़ ही पकड़ ली जाये तो सब चीजें हाथ आ जाती हैं अर्थात् ईश्वर पर विश्वास करो जो सबका पालनहार है।

सुमरण की सुबयों, करो, ज्यों गागर पनिहार।
होले डोले सुरत में, कहै कबीर विचार॥

जैसे पनिहारी का ध्यान हर समय गागर पर ही रहता है इसी प्रकार तुम भी हर समय उठते-बैठते ईश्वर में मन लगाओ इसी में तुम्हारा उद्धार है।

ऊँचे कुल में जामियाँ, करनी ऊँच न होय।
सौरन कलश सुरा भरी, साधु निन्दा सोय॥

कबीरदास जी कहते हैं कि शराब सोने के कलश में ही क्यों न हो फिर भी लोग उसे बुरा ही कहेंगे। इसी प्रकार कोई ऊँचे कुल में जन्म लेकर बुरे कर्म करे तो वह भी बुरा होता है।

यह माया है चूहड़ी, और चूहड़ा की जो।
बाप पूत उरभाय के, संग ना काहो के हो॥

कबीरदास जी कहते हैं कि यह माया ब्रह्मा भंगी की जोरू है, इसने ब्रह्मा और जीव दोनों बाप-बेटों को उलझा रखा है मगर यह दोनों में से एक को भी नहीं देगी। इस लिये तुम

इसके जाल में मत फसों। अर्थात् मोह माया में मत फसों।

जो जन भीगे राम रस, विगत कबहूँ ना रूख।
अनुभव भाव न दरस ते, ना दुःख ना सुख॥

जो मनुष्य राम रस में भीगा रहता है विपत्तियाँ कभी उस की ओर अपना रुख नहीं करतीं। जिसके मन में राम नाम के सिवा दूसरा भाव नहीं है उनको सुख-दुःख का बन्धन नहीं होता।

कबीर जात पुकारया, चढ़ चन्दन की डार।
वाट लगाये ना लगे, फिर क्या लेत हमार॥

कबीर दास जी कहते हैं मैंने चन्दन की डाली पर बैठकर बहुत से लोगों को पुकारकर उनका उचित मार्गदर्शन किया परन्तु जो इस मार्ग पर नहीं आता वह ना आवे। वह हमारा क्या लेता है अर्थात् जो वास्तविकता का ज्ञान प्राप्त नहीं करना चाहता वह अपना ही नुकसान करता है।

जो जाने जीवन आपना, करहीं जीव का सार।
जीवा ऐसा पाहौंना, मिले ना दूजी बार॥

यदि तुम समझते हो कि यह जीवन हमारा है तो उसे राम नाम से भर दो क्योंकि यह जीवन एक ऐसा अतिथि है जो दोबारा प्राप्त होना कठिन है।

लोग भरोसे कौन के, बैठे रहें उरगाय।
जीय रही लूटत जम फिरे, मैंढ़ा लुटे कसाय॥

जैसे कसाई मेंढ़े को मारता है इसी प्रकार जीव को मारने के लिये यम घात लगाये रहता है और समझ में नहीं आता कि लोग किसके भरोसे लापरवाह बैठे रहते हैं। क्यों नहीं वे गुरु से शिक्षा लेते जिससे संसार रूपी भवसागर से पार हो सकें।

अपने अपने साख की, सब ही लीनी मान।
हरि की बात दुरनतरा, पूरी ना कहूँ जान॥

हरि के रहस्य को कोई नहीं समझ सका। उसके रहस्य को समझना कठिन है। बस जिसने यह जान लिया कि मैं सब कुछ जान गया हूँ, इसी अहंकार के वशीभूत होकर वास्तविकता से प्रत्येक व्यक्ति वंचित ही रह जाता है।

साईं आगे सांच है, साईं सांच सुहाय।
चाहे बोले केस रख, चाहे केस मुण्डाय॥

ईश्वर को सत्य पसन्द है, चाहे तुम जटा बढ़ाकर सत्य बोलो अथवा सिर मुंडाकर अर्थात् सत्य का अस्तित्व कभी परिवर्तित नहीं होता। सांसारिक वेशभूषा बदलने से सत्य नहीं बदला जा सकता।

जो तू चाहे मुक्त हो, छोड़ दे सब आस।
मुक्त ही जैसा हो रहे, सब कुछ तेरे पास॥

प्रभु का कथन है कि यदि तू मुक्ति चाहता है तो मेरे अतिरिक्त सब आस छोड़ दे और मेरे जैसा बन जा, फिर तुझे कुछ परवाह नहीं रहेगी। तुझे अपने पास सब कुछ होने का आभास होगा।

भूखा-भूखा क्या करे, क्या सुनावे लोग।
भांडा घड़ा निज मुख दिया, सोई पूर्ण जोग॥

तू भूखा-भूखा कहकर क्या सुनाता है? लोग क्या तेरी उदरपूर्ति कर देंगे। ध्यान रख जिस ईश्वर ने तुझे शरीर और मुँह दिया है वहीं तेरे कार्य पूर्ण करेगा।

खेत ना छोड़े सूरमा, जुझे दो दल मांह।
आशा जीवन मरण की, मन में राखें नांह॥

जो वीर है वह दो सेनाओं के बीच में लड़ता है उसे अपनी मृत्यु की चिन्ता नहीं। वह मैदान छोड़कर नहीं भागता।

साईं ते सब होत है, बन्दे से कुछ नांह।
राई से पर्वत करे, परवत राई नांह॥

ईश्वर सर्वशक्तिमान है वह जो चाहे कर सकता है, बन्दा कुछ नहीं कर सकता। वह राई को पहाड़ और पहाड़ को राई कर दे अर्थात् छोटे को बड़ा और बड़े को छोटा कर सकता है।

कांचे भांडे से रहे, ज्यों कुम्हार का नेह।
भीतर से रक्षा करे, बाहर चोई देह॥

जैसे कुम्हार बहुत ध्यान व प्रेम से कच्चे बर्तन को बाहर से थपथपाता है और अन्दर से सहारा देता है। इसी प्रकार गुरु को शिष्य का ध्यान रखना चाहिए।

प्रेम भाव एक चाहिये, भेष अनेक बनाय।
चाहे घर में बास कर, चाहे बन को जाय॥

मनुष्य चाहे अनेक भेष बनाये, घर में रहे अथवा वन में रहे परन्तु केवल प्रेमभाव होना चाहिए। अर्थात् संसार में किसी भी स्थान पर, किसी भी परिस्थिति में रहे हृदय प्रेमभाव से ओत-प्रोत होना चाहिये।

गर्भ योगेश्वर गुरु बिना, लागा हर का सेव।
कहे कबीर बैकुण्ठ से, फेर दिया शुकदेव॥

यदि किसी ने अपना गुरु नहीं बताया किन्तु जन्म से ही हरि सेवा में लगा हुआ है तो शुकदेव की तरह बैकुण्ठ से आना पड़ेगा।

हरि संगत शीतल भया, मिटी मोह की ताप।
निशिवासर सुख निधि, लहा अन्न प्रगटा आप॥

हरि का स्मरण कर लेने से जीवात्मा की शान्ति हो गई और मोहमाया की अग्नि शान्त हो गई। रात-दिन सुखपूर्वक व्यतीत होने लगे और हृदय में ईश्वर रूप प्रकट होने लगा।

साधु सती और सूरमा, इनकी बात अगाध।
आशा छोड़े देह की, तन की अनथक साध॥

साधु, सती और वीर की बातें न्यारी हैं, ये अपने जीवन की परवाह नहीं करते हैं। इसलिए इनमें साधना भी अधिक है। प्रत्येक मनुष्य इन तीनों की समानता नहीं कर सकता।

केतन दिन ऐसे भये, अन रुचे का नेह।
अवसर बोवे उपजे नहीं, जो नहीं बरसे मेह॥

बिना प्रेम की भक्ति के वर्षों व्यतीत हो गये अतः ऐसी भक्ति से क्या लाभ? जैसे बंजर धरती में बोने से फसल नहीं होती चाहे कितनी ही वर्षा हो। ऐसे ही बिना प्रेम की भक्ति फलदायक नहीं होती।

भगति भजन हरि नावँ है, दूजा दुक्ख अपार।
मनसा बाचा क्रमनाँ, कबीर सुमिरण सार॥

कबीर का कथन है कि ईश्वर की भक्ति, भजन उसका नाम ही महत्त्वपूर्ण है, शेष जितनी बातें हैं वे असीम दुःखदायी हैं। अतः मन, वचन और कर्म से ईश्वर स्मरण करना चाहिए। ईश्वर का स्मरण ही सारतत्त्व है।

कबीर चित्त चमंकिया, चहुँ दिसि लागी लाइ।
हरि सुमिरण हाथूँ घड़ा, बेगे लेहु बुझाइ॥

कबीर जी कहते हैं कि इस संसार में सब जगह विषय-वासनाओं की आग लगी हुई दिखाई देती है। मेरा मन भी उसी आग से जल रहा है। हे जीव! तेरे हाथ में ईश्वर स्मरण रूपी जल का घड़ा है, तू इस जल से शीघ्र ही इस अग्नि को शान्त कर ले।

अंषड़ियां झाईं पड़ी, पंथ निहारि-निहारि।
जीभड़िया छाला पड़्या, राम पुकारि-पुकारि॥

कबीर कहते हैं कि ईश्वर रूपी प्रिय का रास्ता देखते-देखते मेरी आँखों में अंधेरा छाने लगा है और उसका नाम पुकारते-पुकारते मेरी जीभ में छाले पड़ गये है अर्थात् मैं

निरन्तर उनके नाम को पुकार रहा हूँ परन्तु उन्होंने अभी तक मेरे ऊपर कृपा नहीं की।

सुखिया सब संसार है, खावै अरु सोवै।
दुखिया दास कबीर है, जागे अरु रोवै॥

संसारी जीवों को वियोग का अनुभव नहीं है। वे बिना चिन्ता के आनन्दपूर्वक खाते हैं और सोते हैं केवल मुझे ही ईश्वर के वियोग का दुःख है। मैं अपने प्रियतम परमात्मा के वियोग में सारी-सारी रात जागकर रोती रहती हूँ।

कबीर कहा गरबियौ, ऊँचे देखि आवास।
काल्हि पर्‌यूँ भ्वैं लोटणां, ऊपरि जामै घास॥

हे जीव! तू ऊँचे-ऊँचे आवासों को देखकर घमण्ड क्यों कर रहा है? ये भौतिक वस्तुएँ नश्वर हैं। कुछ ही दिनों में ये जमीन पर गिर जायेंगी और उसके ऊपर घास उग आयेगी।

यहु ऐसा संसार है, जैसा सैंबल फूल।
दिन दस के ब्यौहार कौं, झूठे रंग न भूलि॥

यह संसार सेंमर के फूल के समान क्षण-भंगुर है। सेंमर का फूल आकर्षक लगता है; किन्तु उसका आकर्षण क्षणिक है, कुछ ही दिनों में टूटकर गिर जाता है। ठीक ऐसी स्थिति संसार की है। अतः हे प्राणी! तू संसार के थोड़े से दिनों के चमत्कार और व्यवहार में पड़कर वास्तविकता को मत भूल।

इहि औसरि चेत्या नहीं, पसु ज्यूँ पाली देह।
राम नाम जाण्या नहीं, अंति पड़ी मुख षेह॥

कबीरदास जी कहते हैं कि हे प्राणी! समय आने पर भी तू चैतन्य नहीं हुआ और अवसर चूक गया। तू पशु के समान अपने शरीर के पालन-पोषण में लगा रहा। तूने ईश्वर के नाम के महत्त्व को नहीं जाना। इसलिये अन्त में तेरे मुँह में धूल ही पड़ेगी।

यह तन काचा कुम्भ है, लियाँ फिरै था साथि।
ढबका लागा फूटि गया, कछु न आया हाथि॥

जिस प्रकार कच्चा घड़ा तनिक से धक्के से टूट जाता है और उसमें भरा पदार्थ बिखर जाता है। उसी प्रकार यह शरीर भी मृत्यु के तनिक से धक्के से नष्ट हो जायेगा, फिर तुझे कुछ प्राप्त नहीं होगा।

कबीर कहा गरबियौ, देहीं देखि सुरग।
बीछड़ियाँ मिलिबौ नहीं, ज्यूँ काँचली भुवंग॥

हे प्राणी! तू अपने शरीर की सुन्दरता पर घमण्ड क्यों करता है। यह शरीर एक दिन तुझसे छूट जायेगा। फिर यह तुझे उसी प्रकार प्राप्त नहीं होगा जिस प्रकार साँप की केंचुली उसके शरीर से अलग होने पर फिर उसके शरीर पर नहीं चढ़ती है।

जिहि घर साधु न पूजिये हरि की सेवा नाँहि।
ते घर मड़घट सारखे, भूत बसै तिन माँहि॥

कबीर का कथन है कि जिन घरों में सज्जन पुरुष का सम्मान नहीं होता और जो हरि का स्मरण नहीं करते वह घर

वास्तव में शमशान के समान है और वहाँ भूतों का वास रहता है। अर्थात् सच्चा गृहस्थ एक ओर अतिथियों का सम्मान करता है और दूसरी ओर ईश्वर की उपासना में भी मन लगाता है।

मैमंता मन मारि रे, नान्हाँ करि-करि पीसि।
तब सुख पावै सुन्दरी, ब्रह्म झलक्कै सीसि॥

हे मनुष्य! अहंकार से भरे हुये इस मन को वश में कर। इसे वश में करके और महीन पीस-पीसकर सूक्ष्म दृष्टिवाला बना लें। ऐसा करने पर ही तेरी जीवात्मा रूपी सुन्दरी सुख प्राप्त कर सकती है और तभी मस्तिष्क में ब्रह्म ज्योति प्रज्वलित होगी।

कबीर संगति साधु की, बेगि करीजै जाइ।
दुरमति दूरि गँवाइसी, देसी सुमति बताइ॥

कबीरजी कहते हैं कि हमें सज्जनों की संगति अतिशीघ्र करनी चाहिये। अच्छी संगति से हमारी दुर्बुद्धि दूर हो सकती है और हमें सद्बुद्धि प्राप्त हो सकती है।

भजन

कुछ लेना न देना मगन रहना
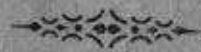
कछु लेना न देना मगन रहना। टेक
पाँच तत्व का बना पिंजरा, जामें बोले मेरी मैना।
गहरी नदिया नाव पुरानी, केवटिया से मिले रहना।
तेरी पिया तेरे घर में बसत है सखी खोलकर देखो नैना।
कहे 'कबीर' सुनो भाई साधो, गुरू के चरनन में लिपट रहना

तेरी बिगड़ी बात बन जाई

तेरी बिगड़ी बात बन जाई, हरिनाम जपा कर भाई। टेक
स्याही इई सफेदी आई, फेर क्या बनेगा भाई।
राम नाम के बड़े आलसी, तुम्हारी मति बौराई। हरि''
दुनियाँ दौलतें माल खजाना, बधिया बैल औगाई।
हम जानी माया संग चलेगी, सबही यहाँ रह जाई। हाँ''
भाई बन्धु कुटुम्ब कबीला, काम न कोई आई।
हम जाना काया संग चलेगा, हंस अकेला जाई। हरि''
सखा पढ़ावन गनका तारी, तरि गई मीराबाई।
कहत 'कबीर' सुनो भाई साधो, तरि गये सदन कसाई। हरि''

भजो रे भैया

भजो रे भैया राम गोविन्द हरी। टेक
जप तप साधन कछु नहीं लागत, खरचन नहीं गठरी।
सन्तत सम्पत सुख के कारन, जासों भूल परी।
कहत 'कबीरा' राम न जा मुख ता मुख धूल भरी।

चादर हो गई बहुत पुरानी

चादर हो गई बहुत पुरानी, अब सोच समझ अभिमानी।
अजब जुलाहे चादर बीनी, सूत करम की तानी।
सुरति निरति को भरना दीना, तब सबके मनमानी।
मैले दाग पड़े पापन के, विषयन में लिपटानी।
ज्ञान का साबुन लाय न धोया, सत संगति के पानी।
भई खराब आब गई सारी, लोभ मोह में सानी।
ऐसे हि ओढ़त उमर गंवाइ, भली बुरी नहीं जानी।
शंका मानि जानु जिय अपने हैं ये वस्तु बिरानी।
कहै 'कबीर' येहि राख जतन से, नहिं फिर हाथ न आनी।

मन लागा मेरा यार फकीरों में

मन लागा मेरो यार फकीरों में। टेक
जो सुख पायो राम भजन में, सो सुख नाहिं अमीरी में।
भला बुरा सबका सुन लीजे, कर गुजरान गरीबी में। मन''
प्रेमनगर में रहिनो हमारी, भलि बनि आई सबूरी में।
हाथ में कुंडी बगल में सोटा, चारों दिशा जगीरी में। मन''
आखिर ये तन, खाक मिलेगा, कहाँ फिरत मगरूरी में।
कहत 'कबीर' सुनो भाई साधो, साहिब मिले संबूरी में।

करम गति टारे नहीं टरी

करम गति टारे नाहीं टरी। टेक
मुनि वशिष्ठ से पंडित ज्ञानी, सोध के लगन धरी।
सीता हरण, मरण दशरथ की, वन में विपत परी।
कहाँ यह फन्द कहाँ वह पारिधी, कहाँ वह मिरगधरी

सीता को हरि ले गयो रावण, सोने की लंका जरी
नीच हाथ हरिश्चन्द्र बिकाने वलि पाताल धरीं
कोटि गैया दान करत नृप, गिरगिट योनि परी
पाण्डव जिनके आपु सारथी, तिन पर विपत परी
दुर्योधन को गर्व घटायों, जदुकुल नाम करी
राहू केतू और भानु चन्द्रमा, विधि संयोग परी
कहत 'कबीर' सुनो भाई साधो, होनी होके रही

पानी में मीन प्यासी

पानी में मीन प्यासी, मोहि सुनि सुनि आवत हांसी। टेक
आत्म ज्ञान बिन नर भटके कोई मथुरा कोई काशी
जैसे मृगा नाभि कस्तूरी वन-वन फिरत उदासी
जल विच कमल, कमल विच कलियां तापर भंवर निवासी
सो मन वस त्रैलोक भयौ सब यती सती सन्यासी
जाको ध्यान धरें विधि हरिहर मुनिजन सहस अठासी
सो तेरे घट मांहि विराजे परम पुरुष अविनाशी
है हाजिर तोहि दूर बहावै दूर की बात निराली

रहना नहीं देश बिराना है

रहना नहीं देश बिराना है। टेक
यह संसार कागज की पुड़िया बूंद पड़े धुल जाना है
यह संसार काँटों की बाड़ी उलझ पुलझ मर जाना है
यह संसार झाड़ और झाखड़ आग लगे जरि जाता है
कहत 'कबीर' सुनो भाई साधो सतगुरू नाम ठिकाना है

बीत गए दिन भजन बिना रे

बीत गए दिन भजन बिना रे
बाल अवस्था खेल गंवायो जब जवानि तब मान घना रे।
काहे कारन मूल गंवायो अजहूं न गई मनकी तृष्णा रे।
कहत कबीर सुना भाई साधो, पार उतर गए सन्त जनारे।

मुखड़ा क्या देखे दर्पण में

मुखड़ा क्या देखे दर्पण में, दया धर्म नहीं मन में। टेक
गहरी नदिया नाव पुरानी, उतरन चाहे पल में।
प्रेम की नैया पार उतरि गई, पापी डूबे जल में। मुखड़ा
दर्पण देखत मूँछ मरोरत, तेल चुवत जुल्फन में।
एक दिन ऐसा आन पड़ेगा, धुल उड़े यही तन में। मुखड़ा
पगिया बांधत पेंच संभारत, फिकिर न लावत मन मन में
एक दिन ऐसा आन पड़ेगा, काम नोचत तन में, मुखड़ा
सुन्दर तिरिया बीड़ा लावे, सोबा चाहे अंग में।
कहै 'कबीर' सुनो भाई साधो, कोई न जैहैं संग में, मुखड़ा

जन्म तेरा बातों ही बीत गयो

जन्म तेरा बातों ही बीत गयों, तेने कबहूं न कृष्ण कहयो।
पांच बरस का भोला भला, अब तो बीस भयो।
मकर पच्चीसी माया कारण, देश विदेश गयो।
तीस बरस की अब मति उपजी, लोभ बढ़े नित नयो।
माया जोरी लाख करोरी, अजहूं न तृप्त भयो।
वृद्ध भयो तब आलस उपजी, कफ नित कण्ठ रहयो।
संगति कबहूं न कीन्हीं, बिरथा जन्म गयो।

यह संसार मतलब का लोभी, झूठा ठाठ रचयो।
कहत 'कबीर' समझन मूरख, तू क्यों भूल गयो।

एक दिन जाना होय जरूर

एक दिन जाना होय जरूर। टेक
हिरणाकश्यप और हरणादिक करी तपस्या पूर।
बैर कीना प्रहलाद भक्त से, मिल गए माटी धूर। एक'''
रावण कुम्भकरण बलवाना बहुत कहें हम शूर।
रामचन्द्र से, बैर बढ़ायों, हो गए चकनाचूर। एक'''
राम लक्ष्मण भये ऐसे ज्ञानी, हुए मर्यादा पूर
तेऊ जग में रहन न पाये, समझि देख मन कूर। एक'''
विभीषण ऐसे पारदर्शी करत दान भरपूर
भीम अर्जुन पाँचों पांडा मिल गए माटी धूर। एक'''
गोपी चन्द भरथरी योगी, करी भरपूर
तेऊ तत तजि सुरलोक सिधारे, जाने सकल जहूर। एक'''
दश अलतार भये जग माही सब जीवन के कूर
तिनको पलक ने पकड़ा नेक करेऊ नहिं दूर। एक'''
जैसा कर्म करे जो कोई, तैसा मिले जरूर
कहैं 'कबीर' सुनो भाई साधो, ठाड़े काल जहूर। एक'''

अजब जमाना आया रे

डर लागे और हाँसी आवे, अजब जमाना आया रे
धन दौलत ले माल खजाना, वेश्या नाच नचाया रे
मुट्ठी भर अन्न साधू कोई मांगे, कहे लाज नहिं आया रे
कथा होय तहं श्रोता सोवे, वक्ता मूढ़ पचाया रे

होय जहाँ कहिं स्वाँग तमाशा, तनिक न नींद सताया रे
भांग तमाकू सुलगा गाँजा, सूखा खूब उड़ाया रे
गुरू चरणामृत नेम न धारे, मधुवाँ चाखन आया रे
उलटी चलन चलो दुनियाँ में, ताते जिय घबराया रे
कहत 'कबीर' सुनो भाई साधो, फिर पाछे पछताया रे

चोरी प्रभु के करिके

चोरी से करिके छिपाओगे किस तरह
अपनी सफाई उनको दिखाओगे किस तरह।
हर एक जगह में हरदम रहता है वो हाजिर
उससे ये अन्धा धुन्ध चलाओगे किस तरह।
दुनियाँ की आँखों में तुम धूल डालते
आँखें हजार उसको बचाओगे किस तरह
ज्ञानी जी है त्रिकाल काल घट-घट को जानता
बातें असत्य उससे बनाओगे किस तरह
जब तक नहीं करोगे तुम कहना 'कबीर' का
तब तक दुःखों से पिंड छुड़ाओगे किस तरह

बागों में मति जा रे

बागों में मति जा रे! तेरी काया में गुलनार। टेक
करनो क्यारी बोय कै, रहनी रख रख बार
कपट को काग उड़ाय के, देखा अजब बहार। बागों में'''
तन माली पर बेचिये, करि संयम को वार
दया वृक्ष सूखे नहीं, सींच क्षमा जलधार। बागों में'''
गुल क्यारी के बीच में, फूल रह कचनार

खिला गुलाबी अजब रंग, गुलाब की डार। बागों में''
अष्ट कमल से होत है, लीला अगम अपार
कहे 'कबीर' चित चेत के आवागमन निवार। बागों में''

धुबिया जल विच मरत पियासा

धुबिया जल विच मरत पियासा''टेक
जल में ठाड़ पिय नहीं मूरख, अच्छा जल है खासा
अपने घर का मरम न जाने, करे धुबियन की आशा
छिन में धुबिया हंसि-हंसि धोवे, छिन में होय उदासा
आपे अंधे करम की रस्सी, आपन घटि के फांसा,
सच्चा साबुन लेहि न, मूरख है सन्तन के पासा।
दाग पुराना छूटत नाहीं, धोवत बारह मासा
एक राति को जोरि लगावे, धरि दिए भरि मासा
कहे 'कबीर' सुनो भाई साधो, आछत आन उपासा

जनम धोखे में खोय दयो

जनम धोखे में खोय दयो''टेक
द्वादस बरस बालापन बीते, बीस में जवान भयो
तीस बरस अंत जब जाग्यो बाढ़ो मोह नयो
धन और धाम पुत्र के कारण, निस दिन सोच भयो
बरस पचास कमर भई टेढ़ी सोचत खाट लहयो
लड़का बाहर बोलो बोले, बुढ़हू मरत गयो
बरस साठ सत्तर के भीतर, केश सफेद भयो
बात पित कफ घेर लयो, नैन नीर बहयो
न गुरू भक्ति, न शुभ साधु सेवा न करम करयो

कहत 'कबीर' सुनो भाई साधो, चोला छूट गयो।

जब तलक विषयों से

जब तलक विषयों से दिल दूर हो जाता नहीं
जो नहीं एकाग्र कर सकता है अपनी वृत्तियाँ
उसको स्वप्न में भी परमात्मा नजर आता नहीं
क्या हुआ वेदों के पढ़ने से, न पाया भेद कुछ
आत्मा जाने बिना ज्ञानी तो कहलाता नहीं
पाप कर्मों से रहता है जिनका मन मलीन
उसको सद् उपदेश यह हरगिज हृदय भाता नहीं
ध्यान से इसको सुनो जो कह रहे हैं 'कबीर'
है बिना सद्गुरू के कोई मुक्ति का दाता नहीं।

राम भजा सोई जगत में जीता

राम भजा सोई जगत में जीता। टेक
हाथ सुमिरिनी, बगल कतरनी, पढ़े भागवत गीता
हृदय शुद्ध कीन्हों नहिं, अबहू मुनत-मुसत दिन बीता
ज्ञान देव की पूजा कीन्हा, हरि सो रहा न प्रीता
धन योवन तेरा योंही जायेगा अन्त समय जाय रीता
बावरिया ने बावरी लूटी, फन्द जल सब कीता
कहे 'कबीर' काल यों मारे ज्यों मिरगने को चीता

कब भजिहों सतनाम

कब भजि हों सतनाम''
ओ मेरे मन! कब खेल गंवायो, जवानी में व्यापो काम

वृद्ध भये तन काँपन लागयो, लटकन लागी चाम कब भजिहों
लाठी टेक चलत मारग में, सहयों जात नहिं थाम
कानन न सुनत, नैनन नहिं सूझे दात हुए बेकाम, कब'''
घर की नारी विमुख हुए बैठी, पुत्र करत बदनाम
बरबरात बथा यह बूढ़ा, अटपट ओठों याम, कब भजिहों
खटिया से भूमि पर कर देहे, छूट गए धनधाम
कहत 'कबीर' कहाँ तक करिहों, यम से पड़ि है काम, कब'''

तन का तनक भरोसा नहीं

तन का तनक भरोसा नाहीं, काहे करत गुमाना रे। टेक
टेढ़े चले मरोड़े मूंछे, विषय मांहि लिपटाना रे
ठोकर लागे चेतकर चलना, कर जाय प्रान पियाना रे
मेरा मेरा करता डोले, माया देख लुभाना रे
या बस्ती में रहना नाहिं, साँचा घर उठ जाना रे
मीर फकीर ओलिया-जोगी, रहा न राजा रानी रे
पर तक तक मारे काल अचानक बना रे
काम-क्रोध, मद-लोभ छोड़कर, शरण धनी के आना रे
कहत 'कबीर' सुनो भाई सन्तो बसरि नाम,
तिरलोकहूँ नही ठिकाना रे। तन का तनक'''

मन फूला फूला फिरे

मन फूला-फूला फिरे जगत में, कैसा नाता रे। टेक
माता कहे या पुत्र है मेरा बहिन कहे ये वीर मेरा रे
भाई कहे यह भुजा हमारी, नारी कहे नर मेरा रे
पेट पकड़ कर माता रोवै, बाँह पकड़ कर भाई रे

लपटि झपटि के तिरिया रोवे, हंस अकेला जाई रे।
जीवे जब तक माता रोवे, बहिन रोवे दश मासा रे
तेरह दिन तक तिरिया रोवे, फेर करे घर बासा रे।
चारा गजा चरगाजी मंगाई, चढ़ा काठ की घोड़ी रे
चारों कोने आग लगाई, फूंक दियो जैसे होरी रे।
हाड़ जरैं जस लोह लाकड़ी, केश जरे जस घासा रे
सोने की सी काया जरि गई, कोई न आयो पासा रे।
घर की तिरिया देखन लगी, ढूँढ फिरी चहुँ देशा रे।
कहै 'कबीर' सुनो भाई साधो, छोड़ो जग की आशा रे।

मन रे हरि भजु

मन रे! हरि भजु-हरि भजु भाई
जा दिन तेरो कोई नाहीं, जानूं-जानूं सुन्दर काया
तन्त्र न जानूं मन्त्र न जानूं, जानूं सुन्दर काया
माला मालिन छत्रपति राजा ते भी खाया माया
बेद न जानूं भेद न जानूं, जानूं एकहि रामा
पंडित दिश पछिवारा कीन्हा, मुख कीनों नित नामा
राजा अम्बरीस के कारन, चक्र सुदर्शन धारै
दास 'कबीर' को ठाकुर ऐसो, भगत की शरन उबारें।

प्रभु के चरणों में

प्रभु के चरणों में ध्यान लगाया करो कभी
परलोक अपना कुछ तो बनाया करो कभी। टेक
आठों पहर परपन्च में जाते हैं तुम्हारे
एक पल तो गुण गुरू का भी गाया करो कभी

आखिर को ये संसार छूट जाएगा तुमसे
तुम भी तो इनको दिल में हटाया करो कभी
ले ले किया है तुमने जमा धन को जोड़ के
देने को भी कुछ हाथ उठाया करो कभी
जब तक हृदय से बन सके, तब तक जरा दिया
दुखियों की तरफ देख के, लाया करो कभी
तृष्णा तो कर रही है प्रबलता से अपना राज
सन्तोष को भी ठौर दिखाया करो कभी
माया के वश में पड़के जो रहता दिवाना
इस मन को अपने ज्ञान सुनाया करो कभी
स्वास्थ्य के लिए तो सदा, फिरते हो भटकते
सन्तों के भी सत्संग में, जाया करो कभी
है हित का तुम्हारे ही, यह कहना 'कबीर' का
इसको न अपने दिल से भुलाया करो कभी

मन न रंगाये-रंगाये योगी कपड़ा

मन न रंगाये-रंगाये योगी कपड़ा। टेक
आसन मारि मन्दिर में बैठे
राम नाम छाँड़ि पूजन लागे पथरा। मन न रंगाये''
सर मुड़वाये योगी जटवा बड़याले
दढ़िया बढ़ाये योगी होय गइले बकरा। मन''
जंगल में जाय योगी धुनिया रमावले
काम जराये योगी ही रंगइले हिजरा। मन न''
मथवा मुढ़ाबे योगी कपड़ा रंगाये

गीता की पोथी बाँध होई गइले लवरा। मन''
कहे 'कबीर' सुनो भाई साधो
यम के दरवाजे बाँध ले जाये पकरा। मन न रंगाये''

साधो यह तन ठाट तम्बूरे का

साधो यह तन ठाट तम्बूरे का। टेक
पाँच तत्व का बना तम्बूरा, तार लगा नव तूरे का
ऐंचत तार मरोरात खूंटी, निकसत राग हजूर का
टूटा तार बिखर गई खूंटी, हो गया धूरम धूरे का
या देही का गर्व न कीजे, उड़ि गया हंस तम्बूरे का
कहे 'कबीर' सुनो भाई साधो, अंगम पंथ कोई सूरे का

तोरी गठरी में लागे

तोरी गठरी ये लागे चोर बटोहिया काहे सोवे। टेक
पाँच पचीस तीन हैं चोर यह सब किन्हा शोर
जाग सवेरा बाट सवेरा फिर न लागे जोर
भवसागत एक नदी बहत है बिन उतरे जीव बोर
कहे 'कबीर' सुनो भाई साधो जगत कीजे भोर

करो रे मनुआ

करो रे मनवा वा दिन की तदबीर। टेक
भवसागर एक नदी अगम है जल बाढ़े गम्भीर
गहरी नदिया नाव पुरानी खेवन हारी बेपीर
लटक छटकाए त्रिया रोवे माता पिता सुत बीर
माल खजाना कौन चलावै साथ न जात शरीर
जब यमराज आनि घेरी हैं तनिक न धरि हैं धीर

मार के सोट प्राण निकालें नयनन बहि हैं नीर
न्याय धर्म से खम्भ में बाँध व्याकुल होय शरीर
कहे 'कबीर सुनो भाई साधो फिर न करेंगे तदबीर

क्या सोया बेचैन मुसाफिर

क्या सोया बेचैन मुसाफिर, क्या सोया बेचैन
इसी नगरी में चोर बसत है, सर्वस धन हरि लेत। टेक
मोह निशा अज्ञान अन्धेरा, चहुँ दिशि छाया आये
तामें सपना देख अनोखा, मुरख रह्यो लुभाये
काल खड़ा सिर पर तेरे, तुझे न तनक विचार
ना जाने कर लेगा कब्र, तेरा पकड़ अहार
पाँव पसारे तू परयो, उदर भयो में भोर
जाग देख सब चल दिए हैं, तेरे साथी और
देख सबेरो बावरे, फिर पीछे पछताय
तुमको जाना दूर है रे! कहै 'कबीर' जगाय

यह जग अन्धा

यह जग अन्धा मैं केहि समझो, इक हुई होय उन्हें समझाओ
इक हुई होय उन्हें समझाओ सबहि भुलाने पेट का धन्धा
पानी के घोड़ा पवन असम्बा ढरक परे जैसे ओस के बुन्दा
शहरी नदियाँ अगम बहै घरवा खेवतहार पड़ि गया फन्दा
घर की वस्तु नजर न आवत दिवाला वारि के देखत अंधा
लागी आग सफल बन जरिया बिन गुरू ज्ञान भटक गया बन्दा
कहे 'कबीर' सुनो भाई साधो इक दिन जाय लंगोटी झार बन्दा

अब मैं दोनों

अब मैं दोनों कुल उजियारी
पांच पुत्र तो उदर में खाये ननद खाय गई चारी
हार परोसिन गोतिन खाई ता पर खाई महतारी
अब मैं दोनों कुल उजियारी
सोलह खसम नैहर में खाए बत्तीस खाये ससुरारी
धन्य सराहुँ बाहि पुरूष को सरबर करत हमारी
सास ससुर हम पाटी बांधे ससुर को गोड उतारी
तुम कल बीरन सेज बिछाओ सोवो टांग पसारी
कहे 'कबीर' सुनो भाई साधो सन्तन लेदु बिचारी
या पद का जो अर्थ लगावे वही पुरूष हम नारी

मेला सभी झिलमिल का

मेला सभी झिलमिल का
अरे कोई सफा न देखा दिल का
बिल्ली देखी बगुला देखा सर्प जो देखा बिल का
ऊपर-ऊपर सुन्दर लागे भीतर गोला पाथर का
काजी देखा मुल्ला देखा पंडित देखा छल का
औरन को बैकुण्ठ बतावे आप नरक में सरका
पढ़े लिखे नहीं गुरु मन्त्र को भरा गुमान कुमति का
बैठे नाहि साधु की संगत में करे गुमान बरन का
मोह की फाँसी परी गरेमा भाव करे नारी का
काम क्रोध दिन रात सतावे लानति ऐसे तन का
सत नाम को पाकर ले बन्दे छोड़ कपट सब दिल का
कहै 'कबीर' सुनो सुलताना पहिर फकीरा खिल का

भजन कर बीती

भजन कर बीती जात घरी
भई में गिरे हवा जब लागी माया अमल परी
पिता धीर मुसकान मन ही मन किलकन कठिन करी
खेलत खात गलिन में झूमें वर्चा और बिसरी
ज्वान भये कामिनि संग माते अब कहुँ कहा सरी
दक्षिण दिशा छियासी योजन यमराज नगरी
ता मग चलत काँटे बाहु लागे सुन ले बात खरी
सौ योजन आगे वेतरनी पार उतरि जब जेहि
चित्रगुप्त जब लेखा माँगे फिर वहाँ कहा करी
साह बड़े जहाज के कारन गुरु उपदेश करी
'कहै कबीर' सुनो भाई साधो सतगुरु पार करी

बस धुन की कुछ खबर

बस धुन की कुछ खबर नहीं जो सदा ये बजाता है
मन मन्दिर भीतर धुन खूब बजे बाहर सुनो तो क्या हुआ
योगी जुगत जाने नहीं कपड़ा रंगे गेनुआ बाना
वाकिफ नहीं जिस नाम से मन्तर लिए से क्या हुआ
शतरंज चोपड़ गंजपा यह गर्द है बदरंग का
बाजी लगाई न प्रेम की खेला जुआ तो क्या हुआ
काशी अयोध्या द्वारिका सारे जहाँ घूमता फिरा
रसना ने नाम लिया नहीं तीरथ किए से क्या हुआ
गाँजा अफीमी और शराबी चाटते चखता फिरा
एक नाम रस चाखा नहीं अमली हुए से क्या हुआ

काफी किताबा खोय के करता नसीहत देश की
समझा नहीं मजहब भला कीजो हुए से क्या हुआ
सब शास्त्र का संग्रह किया कुल श्रेष्ठ पंडित बन गया
जाना नहीं सिरजनहार को पंडित हुए से क्या हुआ
कहता 'कबीर' सोच के नर सोचने ही से बने
साहब तो तेरे पास है घर-घर ढूँढे से क्या हुआ

प्रीति लगी तुम नाम की

प्रीति लगी तुम नाम की पल बिसरे नाहीं
नजर करो अब महर को मोह मिलि गुसाईं
विरहे सतावे हाय अब जिउ तड़पै मेरा
तुम देखन को चाव है प्रभु मिलो सवेरा
नैना तरसे दरस को पल पलक न लागै
दरस-बन्द दीदार का निस वासर जागै
जो अबके प्रीतम मिलै करूँ निमिष न न्यारा
अब 'कबीर' गुरु पांइयाँ मिला प्रान पियरा

मैया की दुल्हिन लूटा बाजार

मैया की दुल्हिन लूटा बाजार
सुरपुर लूट नागपुर लूटा, तीन लोक मचा हाहाकार।
ब्रह्मा लूटे महादेव लूटे, नारद मुनि के परी पिछार।
शृंगी न भृंगी करि डारी, पारासर के उदर विदार।
कनफूँका चिदकासी लूटे, लूटे जोगेसर करत विचार।
हम तो बिचगे साहब दया से, शब्द डोर गहि उतरे पार।
कहत 'कबीर' सुनो भाई साधो, इस ठगनी से रहो हुसियार।